माँ का संघर्ष

आदरणीया,

ज्योति दी

सादर प्रणाम,

जैसे ही मैंने पत्र लिखने का नोटिस, नोटिस बोर्ड पर देखा तो सबसे पहले मेरा ध्यान उस संघर्ष पर गया और शायद उसी वक्त मैं उन संघर्षों को याद कर सोच में पड़ गया। वह सोच उस संघर्ष का है, जो मुश्किल वक्तों में आँसू बनकर निकल पड़ा था और अब वही आँसू हमें उन दर्द भरे लम्हों की याद दिलाते हैं और दृढ़ संकल्प भी दिलाते हैं कि समय जितना भी मुश्किल हो, हमारा नजरिया उसे आसान कर सकता है।

इन चन्द पंक्तियों में शायद मेरी पूरी व्यथा ही स्पष्ट हो गई हो। अगर खुल कर कहूँ तो, चेहरे की मासूमियत दूर होने से पहले ही जब मैं नौ वर्ष का था तब मेरे सर से मेरे पिता का साथ छूट गया और तब से मेरे पापा और मेरी मम्मी दोनों मेरी माँ है। बचपन से आज तक मेरी हर जरूरत को उन्होंने ही पूरा किया है। वो कहते हैं न 'अपना पेट काटकर दूसरों को खिलाना' वही मेरी माँ है।

लेकिन मुझे उनका प्यार तो दिख रहा था, लेकिन उनके पीछे का संघर्ष नहीं। और इसी संघर्ष को समझने के लिए मुझे काफी वक्त लगा। यह बात तब की है जब मेरे पापा जिन्दा थे। उन्हें कैंसर की बीमारी थी। एक शाम, मैं पेंट कर रहा था, तो बगल वाले कमरे से रोने की आवाज आने लगी। मैं दौड़ कर कमरे में पहुँचा लेकिन मूझे थोड़ी देर हो गई; और मेरे पापा.....

मेरे पापा के न होने पर भी मेरी मम्मी मेरा पालन पोषण कर रही है, और इसी तरह मैं अपनी और अपनी मम्मी का संघर्ष समझ पाया। और इतने संघर्षों के बाद भी मेरी माँ ने मुझे ऐसा बनाया कि मैं बड़ा होकर कुछ बनूँ और उनको इतना प्यार दूँ कि वे अपने दुख भरे पलों को भूल जाएँ।

आपका
रौशन पाठक
कक्षा – VIII th
उम्र – 14 वर्ष
मो0 नं0 – 9155517129
पता – सालिमपुर अहरा
कदमकुआँ, पटना – 800003